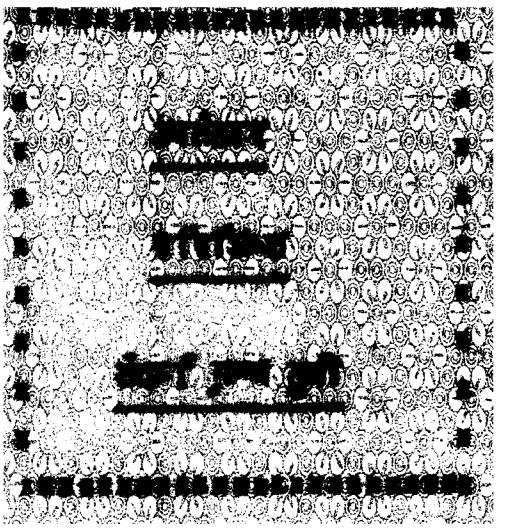

"उपसंहार"

अध्याय पहला :-

इस अध्याय में लेखक का व्यक्तित्व तथा कृतित्व दिया गया है ।

जैनेन्द्रकुमार का जन्म सन १९०५ में कौडियागंज में हुआ । इनकी मुख्य देन उपन्यास तथा कहानी है । एक साहित्यिक विचारक के रूप में जैनेन्द्रकुमार का स्थान अनन्यसाधारण है । अपनी प्रारंभिक शिक्षा हस्तिनापुर में गुरुकुल में हुई । मॅट्रिक परीक्षा प्राइवेट रूप में पास की । यह परीक्षा उन्होंने १९१९ में पंजाब से उत्तीर्ण की । आपकी उच्च शिक्षा काशी हिन्दू विश्व विद्यालय में हुई । १९२१ में उन्होंने पढाई छोडकर कॉंग्रेस के असहयोग आन्दोलन में भाग लिया । १९२१ से २३ के बीच माताके साथ व्यापार किया । इसके बाद उन्होंने लेखन कार्य आरम्भ किया ।

जैनेन्द्र की प्रथम कृति " परख " का प्रकाशन १९२९ में हुआ । इसमें बाल-विधवा-विवाह की समस्या का चित्रण किया है । सन १९३५ में दूसरा उपन्यास " सुनीता " का प्रकाशन हुआ, इस उपन्यास में पति-पत्नी के व्यवहार और प्रतिक्रियाएँ अप्रत्याशित लगती हैं । अप्रत्याशित व्यवहार प्रदर्शन की भावना के कारण ही उपन्यास में क्षीण स्थल आये हैं । " सुनीता " को जैनेन्द्रजी की सर्वश्रेष्ठ औपन्यासिक कृति कहा जा सकता है । जैनेन्द्रकी तीसरी कृति " त्यागपत्र " है । इसका प्रकाशन सन १९३७ में हुआ । मृणाल की सूक्ष्म चारित्रिक प्रतिक्रियाओं विवश इच्छाओं, दमित स्वप्नों की यह मनोवैज्ञानिक कथा अत्यन्त मार्मिक बन सकी है ।

सन १९३९ में जैनेन्द्रकुमार के चौथे उपन्यास " कल्याणी " का प्रकाशन हुआ । वह आत्मकथात्मक शैली में लिखा गया है । इस उपन्यास की विशिष्टता यह है कि, कथा का प्रस्तुत कर्ता उपन्यास का गौण पात्र है । जैनेन्द्र का पाँचवा उपन्यास " सुखदा " । इसका प्रकाशन सन १९५३ ई.में. हुआ । इसका कथानक घटनाओं के वैविध्य बोझ से अक्रान्त है । आवश्यक प्रसंगों के कारण कथा अशक्त हो गयी है ।

जैनेन्द्र की छठवी औपन्यासिक कृति " विवर्त " का प्रकाशन सन १९५३ में हुआ । इस उपन्यास के कथानक का केन्द्र " जितेन " का चरित्र है ।

जैनेन्द्र का सातवाँ उपन्यास " व्यतीत " है, जो सन १९५३ में प्रकाशित हुआ था । इस उपन्यास का नायक कवि जयन्त, है । जयन्त, अनिता, चन्द्री, पुरी, तथा कपिला आदि पात्र कठपुतलियों की भाँति व्यवहार करते हैं । और कथानक की गति बद्ध हो जाती है ।

जैनेन्द्र का आठवाँ उपन्यास " जयवर्धन " है । इसका प्रकाशन सन १९५६ में हुआ । कथात्मकता एवं विचारात्मकता को दृष्टि से यह उनके पूर्व उपन्यासों से पर्याप्त भिन्नता रखाता है ।

" जयवर्धन " के पश्चात दस वर्षों के बाद " मुक्तिबोध " उपन्यास लिखा गया । जिसमें जैनेन्द्र के राजनीतिक और सामाजिक बोध को उनके जीवन दर्शन को उजागर करता है । " मुक्तिबोध " का नायक मि. सहाय गाँधीवादी विचारधारा का है, इसलिए मन्त्री पद का त्यागपत्र देने का निर्णय घोषित करता है, लेकिन उसमें सफलता नहीं

मिलती । इसके बाद " अनन्तर " उपन्यास की रचना लेखक ने की है, इसे " जयवर्धन " उपन्यास में प्रकट विचारधारा की विकसित अथवा प्रौढ कृति कहा जा सकता है । यह उपन्यास आत्मकथात्मक शैली में प्रस्तुत किया है । उपन्यास का नायक " प्रसाद " अपने पुत्र और पुत्रवधू को जो मधुपर्व मनाने के लिए जा रहे हैं, उनको स्टेशन पर विदा करने जाता है । और वहाँ से लौटते वक्त अपने जीवन की व्यर्थता का अनुभव करता है ।

जैनेन्द्र का ग्यारहवाँ उपन्यास " अनामस्वामी " " त्यागपत्र " के " प्रमोद " के त्यागपत्र देने के पश्चात के जीवन का चित्रण इस उपन्यास में किया गया है । प्रथम एक दो परिच्छेदों में चिन्तन परख विश्लेषण है, और कथात्मकता उसमें नगण्य है । फिर बारह परिच्छेदों में लिखकर कथात्मकता का आशय प्रकट किया है ।

जैनेन्द्र का अन्तिम उपन्यास " दशार्क ", कथा, भाषा, शैली, शिल्प सभी दृष्टि से पहले उपन्यासों से भिन्न है । इसमें प्रेम, विवाह के साथ पैसे का प्रश्न जुडा है । " दशार्क " की नायिका रंजना जो पहले सरस्वती थी, लेकिन परिवार टूटने के कारण लोकरंजन के लिए रंजना बनी है, यानी रंजना वेश्या बन जाती है, फिर समाज और सरकार रंजना के साथ किस तरह संघर्ष करते हैं, इसका चित्रण है । जैनेन्द्र की यह औपन्यासिक कृति अलग है, इसमें दस कहानियाँ हैं और वे एक ही सूत्र में पिरोयी हैं, यही इस उपन्यास की विशेषता है ।

इस प्रकार प्रथम अध्यायमें लेखक का व्यक्तित्व तथा कृतित्व इन बातों का विवेचन प्रस्तुत किया है ।

अध्याय दूसरा :-

इस अध्याय में लेखक के साठोत्तरी उपन्यासों का परिचय दिया है । जैनेन्द्र के आरंभिक उपन्यासों में स्वातंत्र्यपूर्व और स्वातंत्र्योत्तर उपन्यास आते हैं । आरंभिक में स्वातंत्र्यपूर्व चार उपन्यास, स्वातंत्र्योत्तर में चार उपन्यास और साठोत्तरी उपन्यासों में चार उपन्यास आते हैं ।

"मुक्तिबोध" "अनन्तर" और अनामस्वामी और दशार्क ये चार उपन्यास हैं । साठोत्तरी उपन्यासों की शिल्प, शैली, कथा आदि बदल गयी है, क्यों कि स्वातंत्र्योत्तर के बाद सामाजिक समस्याएँ ही बदल गयी हैं । साठोत्तरी पीढी को इन उपन्यास के माध्यम से जैनेन्द्र ने संकेत दिया है । " मुक्तिबोध " में मि. सहाय अपने मन्त्री पद का त्यागपत्र देकर गाँव में जाकर किसानों के हित के लिए खेती करना चाहता है, यानी वह गाँधीवादी विचारों को रहने के कारण यहाँ की राजनीति इसे पसन्द नहीं है । लेकिन पत्नी, पुत्र, पुत्रवधू, दामाद, मित्र आदि सहाय को यह करने नहीं देते, यानी " मुक्तिबोध " में सिर्फ " मुक्ति " का बोध हुआ है ।

" अनन्तर " के " प्रसाद " की भी स्थिति कुछ ऐसी ही है । आधुनिक युग और राजनीति से वह त्रस्त है, व्यतीत जीवन से नाराज है, इसी समय आनन्दमाधव और अपरा " प्रसाद " को अबू पर एक सभा के आयोजन के लिए लेकर जाते हैं । इस अति भौतिक वाद से बचने के लिए वन्या द्वारा " शान्तिधाम " की स्थापना जैनेन्द्रजी ने की है ।

" अनन्तर के मुताबिक अनामस्वामी में भी जैनेन्द्रजी ने " आश्रम " की व्यवस्था की है, त्यागपत्र का प्रमोद यानी

सर पी. दयाल अपनी पोती " उदिता " को लेकर आश्रम में आते हैं, क्योंकि वह विदेश में जाकर फँस जाती है। " उदिता " की तरह " शंकर उपाध्याय " भी कुछ ऐसा ही पात्र है, जिसने प्रेयसी, पत्नी की हत्या करके खुद भी आत्महत्या [illegible] करता है, लेकिन बच जाता है।

" दशार्क " जैनेन्द्र का अन्तिम उपन्यास में आर्थिक अभाव के कारण यानी रंजना का पति जुआरी, शराबी बनने से परिवार टूटने के बाद रंजना वेश्या बनती है। मन्त्री के सचिव का सहायक, स्मगलर, पुलिस, सेठ, दादालोग, पत्रकार, मन्त्रीमहोदय, दलाल, मकान मालिक आदि रंजना को किस तरह परेशान करते हैं और उन्हीं के साथ रंजना किस तरह सामना करती है, इसका चित्रण है।

अध्याय तीसरा :-

इस अध्याय में लेखक पर जो विभिन्न प्रभाव हमें दिखाई देते हैं, उनका विस्तार से विवेचन प्रस्तुत किया है। वे प्रभाव इस प्रकार के हैं - जैन दर्शन, गांधी विचारधारा और जैनेन्द्र, जैनेन्द्र पर फ्रायड का प्रभाव, जैनेन्द्र के प्रेरणा स्रोत - रवीन्द्र, शरत् का जैनेन्द्र पर प्रभाव, जैनेन्द्र पर गेस्टाल्टवादी औपन्यासिक तंत्र का प्रभाव। संक्षेप में इस अध्याय में जैनेन्द्रजी पर जो विविध प्रभाव दिखाई देते हैं, उनका विवेचन यहाँ किया है। उनमें कुछ दार्शनिक हैं, कुछ मनोवैज्ञानिक और कुछ साहित्यिक हैं। साथ ही साथ भारतीय और पाश्चात्य भी हैं। जैन दर्शन, गांधी विचारधारा तथा रवीन्द्र और शरत् का प्रभाव जैनेन्द्र जी स्वयं मान्य करते हैं। उनके साहित्य में ये प्रभाव प्रत्यक्ष रूपसे दिखायी देते हैं।

इन प्रभावों को मान्य करते हुए भी जैनेन्द्रजी अपनी विशेषतासे ही साहित्य में उनका विशिष्ट स्थान निर्माण करने में समर्थ हुए हैं ।

अध्याय चौथा :-

इस अध्याय में जैनेन्द्रकुमार के साठोत्तरी उपन्यासों में विभिन्न समस्याएँ बताने का प्रयास किया है, ये समस्याएँ इस प्रकार बतायी हैं, पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, और समकालीन/साठोत्तरी उपन्यासों में " मुक्तिबोध " अनन्तर, अनामस्वामी, दशार्क ये चार उपन्यास आते हैं । इन्हीं में ये सभी समस्याएँ प्रसंगों के द्वारा बतायी हैं, क्यों कि समस्या समझाने में कठिनाई न हो । साठोत्तरी उपन्यासों में जो समस्याएँ हैं वहीं आरंभिक उपन्यासों में भी चित्रित हैं, कुछ समस्या नये रूपमें आ गयी हैं । इसलिए जैनेन्द्रजी ने स्वातंत्र्योत्तर काल में सामाजिक स्थिति, [illegible] परंपरा, और राजनीति के अनुसार ही समस्याओं का चित्रण किया है, और वे समाज परिवर्तन की अपेक्षा रखते हैं । समय के अनुसार समस्याओं के कारणों में परिवर्तन आ गया है, उन कारणों को साठोत्तरी उपन्यासों में जैनेन्द्रजी ने उचित ढंग से बताने का प्रयास किया है ।

अध्याय पाँचवा :-

इस अध्याय में जैनेन्द्र के प्रारंभिक उपन्यासों में तथा साठोत्तरी उपन्यासों में चित्रित समस्याओं का तौलनिक अध्ययन का विवेचन है ।

जैनेन्द्र के आरंभिक उपन्यासों में स्वातंत्र्यपूर्व, परख, सुनीता, त्यागपत्र, कल्याणी ये चार उपन्यास हैं, और स्वातंत्र्योत्तर में सुखदा, जयवर्धन, विवर्त, व्यतीत ये चार उपन्यास आते हैं, और जैनेन्द्र के साठोत्तरी उपन्यासों में मुक्तिबोध, अनन्तर, अनामस्वामी, दशार्क ये चार उपन्यास आते हैं ।

इन बारह उपन्यासों में चित्रित समस्याओं का तौलनिक अध्ययन का विवेचन करते वक्त उस काल की सामाजिक परिस्थिति, परंपरा, राजनीतिक, आर्थिक स्थिति इन्हीं को ध्यान में लेकर तमाम समस्याओं का चित्रण पात्रों के द्वारा प्रसंग दिखाकर ही बताना उचित समझकर वैसा ही किया है । ये समस्याएँ, पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और समकालीन आदि हैं । ये समस्याएँ बताते वक्त आरंभिक उपन्यासों में चित्रित समस्याएँ और साठोत्तरी उपन्यासों में चित्रित समस्याओं को [illegible] तुलना की है ।

समस्याओं के कारण उसके परिणाम और समय इन्हीं के अनुसार बताये हैं, जैसे "त्यागपत्र" की मृणाल, " कल्याणी " की कल्याणी जो अन्याय, अत्याचार सहती है, उस काल की सामाजिक परिस्थिति के अनुसार वे समाज से टूटना या समाज को तोड़ना नहीं चाहते, मगर साठोत्तरी उपन्यासों में " मुक्तिबोध " की नीलिमा, "अनन्तर " की अपरा " अनामस्वामी " की उदिता, " दशार्क " की रंजना समाज के नियम के कारण विद्रोही बनी हैं । इस तरह सभी समस्याएँ प्रसंगोंद्वारा बताकर उन समस्याओं की तुलना की है ।